

दि कर्मिक पोस्ट

Global
School Of
Excellence,
Obedullaganj

वर्ष : 8, अंक : 40

(प्रति बुधवार), इन्दौर, 24 मई 2023 से 30 मई 2023

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

गर्मी का कहर- 2.7 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ, भीषण गर्मी की चपेट में होंगे 60 करोड़ भारतीय

नई दिल्ली। दुनिया भर में बढ़ता तापमान अपने साथ-साथ नए खतरे भी लेकर आ रहा है। उनमें से एक खतरा बढ़ती गर्मी और लू से जुड़ा है। इस बारे में एक नए अध्ययन से पता चला है कि यदि वैश्विक तापमान में होती वृद्धि इसी तरह जारी रहती है तो इसका सबसे ज्यादा असर भारतीयों पर होगा। इस बारे में पता चला है कि तापमान में 2.7 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ 60 करोड़ से ज्यादा भारतीय बढ़ती गर्मी और लू का प्रकोप झेलने को मजबूर होंगे। हालांकि अनुमान है कि यदि बढ़ते तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस पर सीमित कर लिया जाता है तो यह आंकड़ा छह गुना घटकर केवल नौ करोड़ रह जाएगा।

रिसर्च के मुताबिक भीषण गर्मी का कहर तापमान में 1.2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ नाटकीय रूप से बढ़ना शुरू हो जाएगा। अनुमान है कि अब से बढ़ते तापमान में हर 0.1 डिग्री की वृद्धि के साथ 14 करोड़ लोग भीषण गर्मी की चपेट में होंगे। यदि वैश्विक स्तर पर देखें तो अभी भी दुनिया में करीब छह करोड़ लोग ऐसी जगह रह रहे हैं जहां औसत तापमान 29 डिग्री सेल्सियस से ऊपर है। वहीं जिस तेजी से वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है इस बात का अंदेशा है कि सदी के अंत तक वैश्विक तापमान में होती वृद्धि बढ़कर 2.7 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच जाएगी।

22 फीसदी आबादी होगी बढ़ते तापमान से प्रभावित- नतीजन आने वाले भविष्य में दुनिया



की करीब 22 फीसदी आबादी यानी 200 करोड़ लोग भीषण गर्मी, लू और उससे पैदा हुई समस्याओं को झेलने को मजबूर होंगे। इसका सबसे ज्यादा खामियाजा भारत में रह रहे लोगों को भुगतना होगा। जो जानलेवा गर्मी के लिए पहले ही एक हॉटस्पॉट हैं। यह जानकारी एक्सेटर विश्वविद्यालय के ग्लोबल सिस्टम्स इंस्टीट्यूट, अर्थ कमीशन और नानजिंग विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा किए अध्ययन के नतीजे जर्नल नेचर सस्टेनेबिलिटी में प्रकाशित हुए हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक वैश्विक तापमान में होती वृद्धि पहले ही एक डिग्री सेल्सियस के पार जा चुकी है। इसका नतीजा है कि पहले ही दुनिया भर में करीब छह करोड़ लोग भीषण गर्मी और लू की चपेट में हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक यहां भीषण गर्मी में जीने को मजबूर लोगों से तात्पर्य उन लोगों से है जो ऐसे स्थानों पर रह

रहे हैं, जहां का औसत तापमान 29 डिग्री सेल्सियस या उससे ऊपर पहुंच चुका है। रिसर्च के अनुसार भारत के बाद नाइजीरिया दूसरा देश है जहां तापमान में 2.7 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ सबसे ज्यादा आबादी भीषण गर्मी की चपेट में होगी। अनुमान है कि इस वृद्धि के साथ नाइजीरिया में भीषण गर्मी से प्रभावित लोगों का आंकड़ा 30 करोड़ पर पहुंच जाएगा। हालांकि यदि इस बढ़ते तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस पर सीमित कर लिए जाए तो यह खतरा केवल चार करोड़ लोगों को अपना निशाना बनाएगा। इस रिसर्च में वैज्ञानिकों ने बढ़ते तापमान के साथ बढ़ते खतरों के साथ-साथ जलवायु नीतियों की विशाल क्षमता पर भी प्रकाश डाला है। जो इंसानों को जलवायु परिवर्तन की चुकानी पड़ रही कीमत और असमानताओं को सीमित करने में निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं।

पता चला है कि तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस पर सीमित करने से बढ़ती गर्मी का कहर केवल पांच फीसदी लोगों को ही अपना निशाना बना पाएगा। ऐसे में 2.7 डिग्री सेल्सियस की तुलना में मानवता के छठे हिस्से को भीषण गर्मी के कहर से बचाया जा सकेगा। हालांकि वैज्ञानिकों ने इसके साथ-साथ सबसे बुरे हालात का भी जिक्र किया है जिसके अनुसार यदि तापमान में होती वृद्धि बढ़कर 3.6 डिग्री सेल्सियस से 4.4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाएगी तो दुनिया की करीब-करीब आधी आबादी के जीवन पर खतरा मंडराने लगेगा। इस बारे में ग्लोबल सिस्टम्स इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रोफेसर टिम लेंटन का कहना है कि यह कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए समस्या के पैमाने और निर्णायक कार्रवाई के महत्व दोनों को प्रकट करता है। उनके अनुसार बढ़ते तापमान को

2.7 डिग्री सेल्सियस के बजाय 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने का मतलब है कि सदी का अंत तक पांच गुणा कम लोग जानलेवा गर्मी के संपर्क में आएंगे।

ऐतिहासिक रूप से देखें तो दुनिया में ज्यादातर आबादी उन क्षेत्रों में बसी है जहां औसत तापमान 13 डिग्री सेल्सियस से 27 डिग्री सेल्सियस के बीच था। लेकिन जैसे-जैसे वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है उसके चलते बढ़ता तापमान इनमें से कई स्थानों को जीवन के लिए मुश्किल बना देगा।

इसकी वजह से न केवल स्वास्थ्य पर मंडराता खतरा बढ़ जाएगा। साथ ही इस बढ़ते तापमान का असर भारत, नाइजीरिया जैसे देशों में लोगों की श्रम उत्पादकता, बौद्धिक क्षमता, मातृत्व सम्बन्धी जोखिम, कृषि उत्पादकता में गिरावट, बढ़ते संघर्ष और संक्रामक बीमारियों के बढ़ते खतरे के रूप में भी सामने आएगा।

रिसर्च के मुताबिक यदि तापमान में होती वृद्धि 2.7 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच जाती है तो बुर्किना फासो और माली सहित कुछ देशों में बढ़ती गर्मी करीब-करीब सारी आबादी के लिए खतरा बन जाएगी। वहीं इस तापमान पर दुनिया में ब्राजील का सबसे ज्यादा बड़ा क्षेत्र इस बढ़ती गर्मी की चपेट में होगा। इसी तरह ऑस्ट्रेलिया और भारत का भी बड़ा हिस्सा बढ़ते तापमान की वजह इंसानों के लिए रहने योग्य नहीं होगा।

पर्यावरण को संरक्षित करना हर व्यक्ति का नैतिक दायित्व

उज्जैन विक्रम विश्वविद्यालय की कृषि अध्ययनशाला, प्राणिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी अध्ययनशाला, भौतिकी अध्ययनशाला एवं जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो. अखिलेशकुमार पांडेय ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई। भौतिकी अध्ययनशाला में मंगलवार को हुए कार्यक्रम में कुलपति प्रो. पांडेय ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई।

कुछ दिन पूर्व ही विक्रम विश्वविद्यालय का जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया से एमओयू हुआ है और एक दिन पूर्व ही विश्वविद्यालय ने जैव विविधता दिवस बनाया गया। विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करते हुए कुलपति प्रो. पांडेय ने कहा गत दो वर्षों में विक्रम विश्वविद्यालय ने जैव विविधता के संरक्षण के लिए अपने परिक्षेत्र में अहम भूमिका निभाई है और जैव विविधता को संरक्षित करने का सबसे अच्छा उपाय उसे उसके प्राकृतिक परिवेश में संरक्षित करना है। उन्होंने कहा उज्जैन के जैव विविधता समृद्ध क्षेत्रों पर अधिक से अधिक वैज्ञानिक शोध होना चाहिए, ताकि जैव विविधता को संरक्षित किया जा सके। कुलपतिजी ने शोधार्थियों से प्रयोगशाला के साथ फील्ड में जाकर शोध करने एवं ऐसा शोध करने की अपील की, जो उनके शहर के लिए लाभकारी हो। स्वागत भाषण कृषि अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष प्रो. राजेश टेलर ने दिया। रसायन शास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो. उमा शर्मा, भौतिकी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. स्वाति दुबे और प्राणिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष डॉ. सलिल सिंह ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया। इस अवसर पर कृषि अध्ययनशाला, भौतिकी अध्ययनशाला एवं प्राणिकी और जैव प्रौद्योगिकी अध्ययनशाला के शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित थे। संचालन डॉ. पुष्पेंद्रसिंह घोष ने किया। आभार डॉ. शोभा मालवीय ने माना।



भारत में 51 वर्षों के दौरान चरम मौसम से जुड़ी 573 आपदाओं में 138,377 लोगों ने अपनी जान गंवाई

मुंबई। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने पिछले 51 वर्षों का आंकड़ा जारी करते हुए जानकारी दी है कि 1970 से 2021 के बीच भारत में जलवायु से जुड़ी 573 चरम आपदाएं जैसे बाढ़, सूखा, तूफान, लू, भीषण गर्मी, भूस्खलन और दावाग्नि की वजह से 138,377 लोगों ने अपनी गंवाई है। डब्ल्यूएमओ द्वारा यह जानकारी हर चार वर्षों में होने वाली विश्व मौसम विज्ञान कांग्रेस में जारी किए जाते हैं। यह कांग्रेस 22 मई 2023 से जेनेवा में शुरू हो चुकी है। इस कांग्रेस में अगले चार वर्षों में 2027 तक दुनिया के हर इंसान को इन आपदाओं से सुरक्षित रखने के लिए शुरुआती वार्निंग सिस्टम के दायरे में लाने के लिए कार्रवाई में तेजी लाने की बात की है। इसको लेकर उच्चस्तरीय वार्ता शुरू हो गई है।

इस मौके पर विश्व मौसम विज्ञान संगठन द्वारा जारी रिपोर्ट में न केवल भारत, बल्कि दुनिया भर में पिछले 51 वर्षों में आई चरम मौसमी घटनाओं और उनके प्रभावों का लेखा-जोखा प्रकाशित किया है। रिपोर्ट के मुताबिक

पिछले 51 वर्षों में दुनिया भर में जलवायु से जुड़ी करीब 11,778 चरम मौसमी घटनाओं ने दुनिया को अपना निशाना बनाया है। इन आपदाओं में अब तक करीब 20,87,229 लोगों की मृत्यु हो चुकी है। साथ ही आपदाओं ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को करीब 356 लाख करोड़ रुपए (4.3 लाख करोड़ डॉलर) की चोट पहुंचाई है। इस बारे में डब्ल्यूएमओ का कहना है कि जलवायु में आते बदलावों और वैश्विक तापमान में होती वृद्धि के चलते यह चरम मौसमी घटनाएं कहीं ज्यादा प्रबल हो चुकी हैं। हालांकि समय पूर्व चेतावनी प्रणालियों के बेहतर होने से लोगों की जानमाल की हानि को कम करने में मदद मिली है।

बदलती जलवायु और बढ़ते तापमान के साथ बिगड़ रहे हैं हालात- रिपोर्ट के मुताबिक इन आपदाओं में करीब 90 फीसदी मौतें विकासशील देशों में हुई हैं, जो स्पष्ट तौर पर दर्शाता है कि यह देश इन आपदाओं के लिए तैयार नहीं हैं। इतना ही नहीं इन जलवायु आपदाओं

से हुए नुकसान का करीब 60 फीसदी भी इन कमजोर देशों को ही वहन करना पड़ा है। विश्लेषण से पता चला है इन आपदाओं में कमजोर देशों को सबसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ रहा है। पता चला है इन 51 वर्षों में इन कमजोर अर्थव्यवस्थाओं को उनके जीडीपी के करीब 30 फीसदी के बराबर हानि हुई है। ऐसे में विश्व मौसम विज्ञान कांग्रेस में भी यूनाइटेड नेशंस अर्ली वार्निंग्स फॉर ऑल इनिशिएटिव की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

कमजोर तबके को चुकानी पड़ रही है भारी कीमत वहीं यदि छोटे विकासशील द्वीपीय देशों के आंकड़ों को देखें तो उन्हें हर पांच में से एक आपदा के कारण जीडीपी के करीब पांच फीसदी के बराबर नुकसान हुआ है। वहीं कुछ आपदाएं तो इतनी विनाशकारी थी कि उनमें इनकी पूरी जीडीपी ही बर्बाद हो गई थी। इस बारे में मौसम विज्ञान संगठन का कहना है कि सबसे कमजोर देशों और छोटे द्वीपीय विकासशील देशों को उनकी अर्थव्यवस्था की तुलना में इन आपदाओं की बहुत ऊंची कीमत चुकानी पड़ी है। मौसम विज्ञान संगठन के महासचिव प्रोफेसर पेटेरी तालस

के मुताबिक, सबसे सर्वेदनशील हालातों का सामने करने वाले समुदायों को दुर्भाग्यवश, मौसम, जलवायु और जल से जुड़े जोखिमों का खामियाजा भुगतना पड़ता है। रिपोर्ट के अनुसार इन आपदाओं में सबसे ज्यादा जानें एशिया में गई हैं। आंकड़ों से पता चला है कि पिछले 50 वर्षों में इन आपदाओं से एशिया में 984,263 लोगों की जान गई है, जबकि अर्थव्यवस्था को 115,92,462 करोड़ रुपए (140,000 करोड़ डॉलर) का नुकसान उठाना पड़ा है, जिसकी सबसे बड़ी वजह बाढ़ रही।

पता चला है कि 1970 से 2021 के बीच एशिया को जलवायु से जुड़ी कुल 3,612 चरम मौसमी आपदाओं ने अपना निशाना बनाया है। गौरतलब है कि इस दौरान दुनिया भर में इन आपदाओं में जितने लोगों की जान गई हैं उनमें से करीब 47 फीसदी एशिया में ही दर्ज की गई हैं। आंकड़ों के मुताबिक इन आपदाओं की वजह से सबसे ज्यादा बांग्लादेश में 520,758 लोगों की जान गई है। वहीं चीन में मरने वालों का आंकड़ा 88457 दर्ज किया गया है। वहीं

यदि अफ्रीका की बात करें तो 1970 से 2021 के बीच अफ्रीका में 1839 आपदाओं ने अपना निशाना बनाया है। इन चरम मौसमी आपदाओं में 733 585 लोगों ने अपनी जानें गंवाई हैं, जबकि अर्थव्यवस्था को 4,300 करोड़ डॉलर का नुकसान हुआ है। इनमें से 95 फीसदी से ज्यादा मौतों के लिए सूखा की घटनाएं जिम्मेवार थी। ऐसे में इनकी रोकथाम के लिए समय पूर्व चेतावनी प्रणाली के महत्व को बल देते हुए डब्ल्यूएमओ ने बताया कि यदि किसी भी मौसमी सम्बन्धी जोखिम के बारे में, 24 घंटे पहले सूचना मिलने से उससे होने वाली सम्भावित क्षति को 30 फीसदी तक कम किया जा सकता है। यही वजह है कि समय पूर्व चेतावनी प्रणालियों को जलवायु अनुकूलन का एक ऐसा उपाय बताया गया है, जिसे आसानी से सच किया जा सकता है, और इसमें किए गए निवेश से 10 गुना ज्यादा फायदा होता है।

उष्णकटिबंधीय चक्रवात का आकार और तीव्रता तय करता है हवा का शुरुआती प्रभाव

नई दिल्ली। अध्ययन के निष्कर्ष विनाशकारी प्राकृतिक आपदाओं के पूर्वानुमान लगाने और उनसे निपटने की तैयारी के लिए हमारी क्षमता में सुधार करने में मदद कर सकते हैं अभी कुछ दिन पहले बंगाल की खाड़ी में बने 'मोका' नाम के भयंकर चक्रवाती तूफान ने मायमार के कुछ इलाकों में काफी तबाही मचाई। इसके कारण लोगों को आर्थिक नुकसान के साथ अपनी जाने भी गवानी पड़ी थी। इस तरह के उष्णकटिबंधीय चक्रवात (टीसी) लगातार बढ़ रहे हैं जो जान माल को नुकसान पहुंचाने के लिए जिम्मेदार हैं।

आखिर ये तूफान इतने भयंकर रूप कैसे धारण करते हैं? इसमें हवा किस तरह की भूमिका निभाती है?

इन तूफानों के आकार और तीव्रता से इसके कारण होने वाले विनाश के स्तर को निर्धारित किया जा सकता है। हालांकि, वैज्ञानिकों ने बताया कि, विकास के चरण के दौरान उष्णकटिबंधीय चक्रवात (टीसी) के आकार और तीव्रता के बीच संबंध को समझना मुश्किल है। अब, चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेज के इंस्टीट्यूट ऑफ एटमोस्फेरिक फिजिक्स के प्रोफेसर चैन गुआंगहुआ के नेतृत्व में शोधकर्ताओं की एक टीम ने उनके गठन के दौरान उष्णकटिबंधीय चक्रवात के हवा के क्षेत्र की संरचना

की जांच करके इस संबंध का खुलासा किया है। शोधकर्ताओं ने तीव्रता वृद्धि के समान स्तर के तहत आकार विस्तार के बढ़ते प्रभाव को लेकर दो महत्वपूर्ण मापदंडों को उजागर किया है। जिसमें पहला अधिकतम हवा की त्रिज्या (आरएमडब्ल्यू) और इसके बाहर हवाओं को फैलाने वाले अवसाद या डिप्रेशन के सापेक्ष प्रभावों का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि बड़े अधिकतम हवा की त्रिज्या (आरएमडब्ल्यू) और भारी हवाओं के क्षेत्रों के साथ भंवरो में तीव्रता वृद्धि के समान स्तर के तहत अधिक विस्तार कर सकती है, जो बड़े आरएमडब्ल्यू के साथ आने

वाले तूफानों पर गौर करने पर प्रकाश डालते हैं। शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि आरएमडब्ल्यू ने आकार-तीव्रता के संबंध में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। शुरुआती आरएमडब्ल्यू में वृद्धि ने तूफान या चक्रवात के वातावरण के ठीक बाहर का क्षेत्र, जो घने बादलों, भारी वर्षा और तेज हवाओं से जुड़ा होता है, उसके विकास को काफी धीमा कर दिया, जिससे उसकी तीव्रता धीमी हो गई। दूसरी ओर, शुरु में भयंकर हवाओं ने सक्रिय बाहरी अधिक गर्म भाग से ठंडे भाग की ओर बढ़ने में मदद की, जो कि आकार के विस्तार के लिए अनुकूल थे, जो आंतरिक क्षेत्र में हवा के प्रसार को कम कर सकता था और आरएमडब्ल्यू के बढ़ने की तीव्रता को रोक सकता है। प्रोफेसर चैन ने कहा, यह अध्ययन

आकार-तीव्रता के संबंध के अंतर के लिए जिम्मेदार तंत्र को समझने का एक शुरुआती प्रयास है। अधिक जटिल आंतरिक और बाहरी ताकतों को शामिल करने के लिए और शोध की जरूरत है। उष्णकटिबंधीय चक्रवात (टीसी) के आकार और तीव्रता के संबंध को समझना उनके द्वारा होने वाले विनाश का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के निष्कर्ष इन विनाशकारी प्राकृतिक आपदाओं के पूर्वानुमान लगाने और उनसे निपटने की तैयारी के लिए हमारी क्षमता में सुधार करने में मदद कर सकते हैं। यह अध्ययन एडवांसेज इन एटमोस्फेरिक साइंस नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

पश्चिम विक्षोभ सक्रिय, उत्तर पश्चिम-पूर्वोत्तर भारत में बारिश-वज्रपात तथा ओलावृष्टि के आसार

नई दिल्ली। मौसम विभाग के मुताबिक, पश्चिमी विक्षोभ ईरान और उसके आसपास के क्षेत्रों पर बना हुआ है। वहीं निचले स्तरों में मध्य पाकिस्तान के ऊपर एक चक्रवाती प्रसार जारी है। इन गतिविधियों के 24 से 26 मई के दौरान पूरे उत्तर पश्चिम भारत में फैलने का अनुमान है। मौसम विभाग ने बताया कि, इस अवधि के दौरान अरब सागर से उत्तर पश्चिम भारत में नमी की आपूर्ति होना भी जारी रहेगी। निचले स्तरों पर बंगाल की खाड़ी से पूर्वोत्तर भारत की ओर तेज दक्षिण-पश्चिमी हवाएं चल रही हैं। उपरोक्त मौसम संबंधी गतिविधि को देखते हुए मौसम विभाग ने पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र के अधिकांश इलाकों में तेज हवाओं के साथ हल्की से मध्यम बारिश होने

तथा में बिजली गिरने की आशंका जताई है।

वहीं आज 24 मई को जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, गिलगित, बाल्टिस्तान और मुजफ्फराबाद, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, दक्षिण हरियाणा और बिहार के अलग-अलग हिस्सों में मूसलाधार बारिश होने के आसार हैं। पूर्वोत्तर भारत में असम और मेघालय के कुछ हिस्सों में भारी से बहुत भारी बारिश होने के आसार हैं। वहीं नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा के कुछ हिस्सों में जमकर बरसेंगे बादल। आज उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली और पश्चिम बंगाल में गंगा के अलग-अलग तटीय हिस्सों में बिजली गिरने तथा 50 से 60 किमी प्रति घंटे की दर के साथ चलने वाली तूफानी हवाओं के साथ ओलावृष्टि होने के आसार हैं। वहीं आज उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम, बिहार, हिमाचल प्रदेश,

पश्चिम उत्तर प्रदेश और उत्तरी राजस्थान के अलग-अलग हिस्सों में 40 से 50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार के साथ तेज हवाएं चलने तथा बिजली गिरने की आशंका है। वहीं आज त्रिपुरा के अलग-अलग हिस्सों में बिजली गिरने तथा 50 से 60 किमी प्रति घंटे की गति से चलने वाली हवाओं के साथ बारिश होने के आसार हैं। मौसम विभाग ने देश के अधिकतर इलाकों में तेज हवाओं के साथ बिजली गिरने तथा बौछरें पड़ने का अनुमान लगाया है। आज राजस्थान के अलग-अलग हिस्सों में बिजली गिरने, 40 से 50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली तूफानी हवाओं के साथ धूल भरी आंधी की आशंका जताई गई है। मौसम विभाग ने कहा है कि, अगले दो दिनों में उत्तर पश्चिम भारत में

चिलचिलाती गर्मी से राहत मिल सकती है, यहां के अधिकतम तापमान में चार से छह डिग्री सेल्सियस की गिरावट आने की संभावना है और इसके बाद अधिकतम तापमान में कोई बड़ा बदलाव होने की संभावना नहीं है। वहीं अगले दो दिनों के दौरान पूर्वी भारत में अधिकतम तापमान में दो से चार डिग्री सेल्सियस की गिरावट आने का अनुमान है और इसके बाद अधिकतम तापमान में कोई खास बदलाव होने का पूर्वानुमान नहीं है। मौसम विभाग के मुताबिक अगले 24 घंटों के दौरान मध्य और पश्चिम भारत में अधिकतम तापमान में कोई बड़ा बदलाव नहीं होगा और उसके बाद दो से चार डिग्री सेल्सियस की गिरावट आएगी। मौसम विभाग की मानें तो अगले पांच दिनों के दौरान उपरोक्त हिस्सों को छोड़कर देश के बाकी इलाकों में अधिकतम तापमान में कोई खास बदलाव होने की संभावना नहीं है। मौसम विभाग के अनुसार, दक्षिण पश्चिम मॉनसून की उत्तरी सीमा निरंतर

आगे बढ़ रही है। अगले दो दिनों के दौरान दक्षिण बंगाल की खाड़ी, अंडमान सागर और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के कुछ और हिस्सों में दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के आगे बढ़ने के लिए परिस्थितियां अनुकूल बनी हुई हैं। पूर्वोत्तर और आसपास के उत्तर पश्चिमी अरब सागर के साथ-साथ गुजरात तट पर 45 से 55 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली हवाओं के 65 किमी प्रति घंटे की रफ्तार में तब्दील होने के आसार हैं। उपरोक्त मौसम संबंधी गतिविधि को देखते हुए, मौसम विभाग ने मछुआरों को इन इलाकों में मछली पकड़ने तथा किसी तरह के व्यापार से संबंधित काम के लिए न जाने की चेतावनी जारी की है। मध्य महाराष्ट्र के अलग-अलग हिस्सों, कर्नाटक, तेलंगाना, तमिलनाडु और लक्षद्वीप में आंधी चली। मौसम संबंधी इसी तरह की गतिविधि के आज भी जारी रहने के आसार हैं।



गर्भस्थ शिशु की सेहत बिगाड़ रहा दूषित पर्यावरण

नई दिल्ली। डब्ल्यूएचओ और यूनिसेफ की रिपोर्ट के मुताबिक प्रदूषित पर्यावरण के कारण अजन्मे बच्चों को अपनी जान गवानी पड़ रही है। 9 मई, 2023 को 'बोर्न टू सून्, डिक्डेड ऑफ एक्शन ऑन प्रीटर्म बर्थ' नाम से जारी की गई संयुक्त रिपोर्ट में साल 2020 में करीब डेढ़ करोड़ बच्चे अपरिपक्व पैदा हुए थे। हर दस में से एक बच्चा प्रीमैच्योर डिलीवरी से पैदा हुआ। दक्षिण एशिया में यह अनुपात सबसे अधिक है। भारत दक्षिण एशिया का देश है।

प्रीमैच्योर डिलीवरी के मामले में भारत दुनिया के टॉप देशों में शामिल है। साल 2020 में भारत में 13 फीसदी बच्चे प्रीमैच्योर पैदा हुए, संख्या के मामले में यह आंकड़ा 30 लाख से अधिक होगा। इस रिपोर्ट के मुताबिक भारत में प्रीमैच्योर डिलीवरी का सबसे बड़ा कारण प्रदूषित पर्यावरण, संतुलित भोजन का अभाव, हीट स्ट्रोक है। भारत में अपरिपक्व बच्चों के जन्म का सबसे बड़ा कारण (स्फूर्तदृष्ट हृदय) अत्यधिक गर्मी को बताया गया है। गर्मी के कारण 16 फीसदी बच्चे अपरिपक्व जन्में। पैदा हुए इन बच्चों में कुछ ऐसे भी थे, जिनका वजन 500 ग्राम से कम था। स्वस्थ बच्चे के जन्म के लिए 37 से 42 सप्ताह का समय लगता है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि प्रीमैच्योर डिलीवरी के मामले में 28 सप्ताह से कम के भी शिशुओं ने जन्म लिया है। दक्षिण एशिया में बांग्लादेश के हालात और भी खराब हैं। वहां यह आंकड़ा 16 फीसदी से अधिक है। रिपोर्ट के मुताबिक घरेलू वायु प्रदूषण भी गर्भस्थ शिशु के कम वजन और प्रीमैच्योर डिलीवरी के लिए जिम्मेदार है। 'इन हाउस पाल्यूशन' के कारण दुनियाभर में 15.2 फीसदी बच्चे कम वजन के पैदा हुए और करीब 35 फीसदी बच्चे समय से पूर्व पैदा हुए। दूषित पर्यावरण माता के मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, जिसका प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर भी पड़ता है। अपरिपक्व पैदा होने वाले बच्चों का मानसिक और शारीरिक विकास सामान्य नहीं हो पाता है। ऐसे बच्चों को अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है। इस रिपोर्ट में देशों की सरकारों के लिए एक कार्ययोजना भी प्रस्तुत की गई है, जिससे प्रीमैच्योर डिलीवरी के मामलों में सुधार किया जा सके।

पाकिस्तान पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए हरित सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देगा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के राष्ट्रपति आरिफ अल्वी ने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए देश में पर्यावरण के अनुकूल सार्वजनिक परिवहन को और बढ़ावा देने की जरूरत है। अल्वी ने जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और अन्य के अधिकारियों के साथ एक बैठक में कहा, हरित परिवहन (ग्रीन ट्रांसपोर्टेशन) का उपयोग कार्बन उत्सर्जन, पर्यावरण प्रदूषण और जीवाश्म ईंधन के लिए पाकिस्तान के आयात बिल को कम करने में मदद कर सकता है। राष्ट्रपति ने पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के साथ-साथ ईंधन पर देश की निर्भरता को कम करने के लिए कुशल और जलवायु के अनुकूल परिवहन टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देने का आह्वान करते हुए कहा कि देश के विकास के लिए नई तकनीक जरूरी है। उन्होंने कहा कि व्यावसायिक समुदाय को प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए औद्योगिक अपग्रेडेशन और आधुनिकीकरण पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है।



पीएम मोदी की पहल पर पर्यावरण संरक्षण के लिए शुरू हुआ खास अभियान, जानें पूरा प्लान

ओझा/पलामू. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पहल पर विश्व पटल पर पर्यावरण संरक्षण को लेकर अभियान शुरू किया गया है। इस अभियान के तहत पानी, ऊर्जा, वन, वन्य जीव संरक्षण को लेकर कार्य किया जा रहा है। 5 जून तक इस अभियान को चलाया जा रहा है। 5 जून पर्यावरण दिवस तक लोगों को प्राकृतिक और पर्यावरण संरक्षण संबंध में जागरूक किया जा रहा है। पलामू टाइगर रिजर्व में भी इस अभियान को लेकर गांव-गांव, स्कूल, समेत सभी को जागरूक किया जा रहा है।

पलामू टाइगर रिजर्व द्वारा पीटीआर क्षेत्र समेत आस-पास के क्षेत्र में लाइफ स्टाइल फॉर इनवॉर्नमेंट (मिशन लाइफ) के तहत बेतला रेंज में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इको विकास समिति द्वारा गांव-गांव में घूम-घूम कर पर्यावरण संरक्षण को लेकर किए जा रहे प्रयास और पर्यावरण संरक्षण कितना जरूरी है, इसे लेकर जागरूक किया जा रहा है। स्कूल में भी स्कूली बच्चे और शिक्षक, सीआरपीएफ सभी को पीटीआर द्वारा अभियान चला कर जागरूक किया जा रहा है। इस दौरान पर्यावरण संरक्षण पर जिसके द्वारा उत्कृष्ट कार्य किया जायेगा उसे पीटीआर प्रबंधक द्वारा 5 जून को सम्मानित भी किया जाएगा। डिप्टी डायरेक्टर प्रजेश कांत जेना ने बताया की आज के समय में ग्लोबल वार्मिंग बड़ा खतरा बना हुआ है। ऐसे में पर्यावरण संरक्षण बेहद जरूरी है। इसे लेकर प्रधानमंत्री द्वारा अभियान चला कर लोगों को पर्यावरण के प्रति प्रेरित किया जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण सभी लोगों की भूमिका है। बेतला नेशनल पार्क एक राष्ट्रीय धरोहर है। इसे बचाना बेहद जरूरी है। वन्य और वन्य जीवों का संरक्षण करना हमारा दायित्व है। इसी कार्यक्रम के तहत पलामू किला, कमलदह झील, बेतला और केचकी की भी सफाई कराई जा रही है। इस अभियान में सभी शामिल हो सकते हैं। पर्यावरण सबके हिस्से में आता है। इसीलिए सभी मिल जुलकर पर्यावरण संरक्षण के इस अभियान में शामिल हो सकते हैं। जिनके द्वारा उत्कृष्ट कार्य किया जायेगा उन्हें पीटीआर द्वारा सम्मानित किया जाएगा।

पर्यटक नहीं फैलाए गंदगी

प्रजेश कांत जेना ने बताया की पलामू किला परिसर समेत आस-पास के पर्यटक स्थल पर प्रतिदिन सैकड़ों पर्यटक घूमने आते हैं। यत्र तत्र प्लास्टिक समेत कचरा छोड़ जाते हैं। जिससे वन्य और वन्य जीवों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इस अभियान में पर्यटक भी शामिल होकर पर्यावरण संरक्षण के अभियान का हिस्सा बन सकते हैं।